प्रकाशन संख्या–४६

वर्तनी की अशुद्धियाँ

वर्गीकरण एवं सुधार

माध्यमिक स्तर



राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
उ त्त र प्र दे श

१९८३

प्रकाशन संख्या—४९

वर्तनी की अशुद्धियाँ

वर्गीकरण एवं सुधार

(माध्यमिक स्तर)



राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश,
वाराणसी
वर्ष १९८३

दो शब्द

भाषा के चार कौशल–सुनना, पढ़ना, बोलना एवं लिखना हैं। इसमें बोलने और लिखने का विशेष स्थान है। इन दोनों कौशलों में छात्रों को सक्षम बनाना भाषा-शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है। लेकिन वस्तुस्थिति यह है कि उच्च कक्षाओं में भी वर्तनी की सामान्य त्रुटियाँ पायी जाती हैं, जिसका मुख्य कारण है—प्रारम्भ से ही शुद्ध अभ्यास के प्रति ध्यान न देना। प्राथमिक स्तर से शुद्ध लेखन–अभ्यास द्वारा वर्तनी की इन त्रुटियों का निराकरण किया जा सकता है।

इसी उद्देश्य को दृष्टि में रखकर राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी द्वारा १९८२–८३ में किये गये शोध के आधार पर प्राथमिक, पूर्वमाध्यमिक और माध्यमिक स्तर के छात्रों के निमित्त वर्तनी की सामान्य अशुद्धियों एवं उनके निराकरण के उपायों पर लघु पुस्तिकाएँ तैयार करायी गयी हैं। इनमें शोधकर्ताओं ने छात्रों की त्रुटियों का वर्गीकरण कर उनके निराकरण के उपायों को सुझाया है।

यह पुस्तिका छात्रों एवं अध्यापकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

डॉ० गुरुमौज प्रकाश

निदेशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण

परिषद, उ० प्र०, लखनऊ।

प्राक्कथन

"यद्यपि बहुनाधीषे तथापि पठ पुत्र व्याकरणम् ।
स्वजनः श्वजनो मा भूत, सकलं शकलं सकृच्छकृत ॥"

उपर्युक्त श्लोक वर्तनी की शुद्धता, उसकी आवश्यकता तथा महत्व को प्रमाणित करता है।

इसे विडम्बना ही कहा जायगा कि जहाँ हम किसी विदेशी भाषा का ज्ञानार्जन उसके व्याकरण से आरम्भ करते हैं, वहाँ मातृभाषा का ज्ञान आरम्भ में मौखिक (उच्चरित) तथा बाद में लिखित रूप में ग्रहण करते हैं। लिखित रूप में भी वर्तनी का स्थान गौण समझ लिया जाता है।

हिन्दी के ज्ञान-वर्धन में उसकी वर्तनी, अक्षर, उच्चारण, शब्द-रचना तथा वाक्य रचना को गौण समझकर उसकी अवहेलना करते हैं। इस कमी को दूर करने के उद्‌देश्य से प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक तथा माध्यमिक स्तर पर "वर्तनी की सामान्य अशुद्धियाँ—वर्गीकरण एवं सुधार" विषय पर संस्थान द्वारा शोध कार्य कराये गये हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य संस्थान के शोध प्रवक्ता डॉ० शोभनाथ त्रिपाठी द्वारा किया गया है। यहाँ अध्ययन स्वरूप प्राप्त छात्रों की अशुद्धियों का वर्गीकरण कर डा० त्रिपाठी द्वारा निष्कर्ष स्वरूप कुछ ठोस सुझाव भी प्रस्तुत किये गये हैं जिनका अनुकरण करने पर वर्तनी की अशुद्धियाँ दूर करने तथा एकरूपता लाने में सरलता होगी।

हिन्दी भाषा का ज्ञान वर्तनी के शुद्ध प्रयोग के बिना अपूर्ण है। ध्वनि (उच्चारण) अक्षर, शब्द तथा वाक्य ज्ञान से भाषा तथा साहित्य का रूप निखरेगा।

हमें आशा है कि हमारी युवा-पीढ़ी तथा हमारे हिन्दी-शिक्षक वर्तनी के ज्ञातव्य नियमों को हृदयंगम कर हिन्दी भाषा-भाषी जगत में एक मानक-रूप सुस्थिर करने में सहायक होंगे, तभी लेखक का परिश्रम सफल तथा सार्थक होगा।

डॉ० बुद्धि सागर
निदेशक
राज्य हिन्दी संस्थान, उ० प्र०,
वाराणसी।

प्रकाशकीय

मौखिक-आत्म प्रकाशन को जब लिपिबद्ध किया जाता है, वर्तनी की महत्ता प्रकट होने लगती है। वर्तनी की साधारण-सी भूल से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। शिक्षालयों के पठन-पाठन का मेरुदण्ड लेखन ही होता है, जिसे छात्र लिपि-बद्ध करके भावी जीवन की तैयारी करते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में राज्य हिन्दी संस्थान के शोध प्रवक्ता डॉ० शोभनाथ त्रिपाठी ने माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में छात्रों द्वारा की जाने वाली हिन्दी की वर्तनीजन्य सामान्य त्रुटियों का संकलन कर वर्गीकरण के आधार पर उनके निराकरण के उपायों को सुझाया है। आशा है, यह लघु पुस्तिका छात्रों-अध्यापकों के लिए उपादेय होगी।

शिवमूर्ति मिश्र

प्रकाशन अधिकारी

राज्य हिन्दी संस्थान, उ० प्र०,

वाराणसी।

विषय-सूची

●

अध्यापकों से

भाषा के दो रूप होते हैं—मौखिक और लिखित। मौखिक रूप की अपेक्षा लिखित रूप पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों तथा पुस्तकों के रूप में चिरस्थायी होता है। किसी भी भाषा में उसके मौखिक एवं लिखित रूप में गहरा सम्बन्ध होता है। सामान्य रूप से हम जो कुछ बोलते हैं और सुनते हैं, उसे स्थायी बनाने के लिए लिखित रूप प्रदान करते हैं। हिन्दी में हम जैसा बोलते हैं वैसा ही लिखते हैं। यदि हम प्रत्येक वर्ण का शुद्ध उच्चारण करें और उस उच्चारण के अनुसार ही वर्णों को क्रम से नियोजित करके शब्दों को लिखते जायँ तो लेखन में कोई त्रुटि नहीं हो सकती। किन्तु व्यावहारिक रूप में देखा जा रहा है कि हिन्दी में शब्दों के लेखन में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ हो रही हैं। ये त्रुटियाँ प्रायः व्याकरण की जानकारी के अभाव तथा भ्रामक एवं अशुद्ध उच्चारण के कारण होती हैं। प्राथमिक, पूर्वमाध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर पर ये त्रुटियाँ विभिन्न रूपों में पायी जाती हैं। फिर भी प्रत्येक स्तर की त्रुटियों के वर्गीकरण में कोई निश्चित रेखा खींच पाना कठिन है। क्योंकि कुछ त्रुटियाँ प्राथमिक, पूर्वमाध्यमिक तथा माध्यमिक तीनों स्तर पर पायी जाती हैं। फिर भी प्राथमिक स्तर की बहुत-सी त्रुटियाँ पूर्व माध्यमिक स्तर पर और पूर्वमाध्यमिक स्तर की बहुत सी त्रुटियाँ माध्यमिक स्तर पर पहुँचकर सुधर जाती हैं।

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित उद्देश्यों को दृष्टि में रखकर कार्य किया गया है—

१. छात्रों को शुद्ध वर्तनी के नियमों का ज्ञान कराना।
२. उनमें शुद्ध एवं स्पष्ट लेखन की क्षमता का विकास करना।
३. उनको शुद्ध लेखन की विधियों से अवगत कराना।
४. पाठ्यपुस्तक में आये नवीन शब्दों तथा अन्य, स्रोतों से सीखे गये शब्दों की वर्तनी का सही ज्ञान कराना।
५. अशुद्ध वर्तनी के संशोधन की विधियों से अवगत कराना।
६. छात्रों में शुद्ध लेखन के प्रति रुचि जागरित करना।
७. शुद्ध लेखन अभ्यास हेतु अध्यापकों के उपयोग के लिए शुद्ध-

अशुद्ध शब्दों का निर्देश करते हुए उस प्रकार के अन्य शब्दों के अभ्यास हेतु शुद्ध शब्दों की विस्तृत तालिका उपलब्ध कराना।

प्रस्तुत शोध पुस्तिका में माध्यमिक स्तर पर मिलनेवाली अशुद्धियों के अनेक उदाहरण देकर शुद्धरूप प्रस्तुत किये गये हैं। माध्यमिक स्तर पर वर्तनीगत त्रुटियों के उचित अभ्यास हेतु प्रत्येक वर्गीकृत त्रुटियों के विवरण के साथ उनका समाधान भी प्रस्तुत किया गया है। साथ ही प्रत्येक वर्ग से सम्बन्धित शुद्ध शब्दों की विस्तृत तालिका भी दी गयी है। अन्त में परिशिष्ट में कुछ विशिष्ट शब्दों की तालिका एक स्थान पर उपलब्ध करायी गयी है। इसके पूर्व ही नागरीलिपि सम्बन्धी कतिपय सामान्य भ्रान्तियों का निराकरण भी किया गया है। प्रत्येक वर्ग की त्रुटियों के साथ ही उनके सुधार के उपाय भी सुझाये गये हैं।

अध्यापकों से अनुरोध है कि वे वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों के शुद्ध अभ्यास हेतु माध्यमिक स्तर पर भी प्रत्येक कक्षा के छात्रों का जुलाई के आरंभ में ही वर्तनीगत त्रुटियों की जानकारी हेतु एक निदानात्मक परीक्षण कर लें। इससे वे प्रत्येक बच्चे की वर्तनी गत त्रुटियों तथा उनके द्वारा लिखे जाने वाले वर्णों के रूप से भली-भाँति परिचित हो जायँगे तथा उनका संशोधन कर शुद्ध अभ्यास कराने में समर्थ हो सकेंगे।

अध्यापकों से यह भी निवेदन है कि वे कक्षा में बोलते समय स्वयं शब्दों का शुद्ध उच्चारण करें, शुद्ध खड़ी बोली में बोलें तथा छात्रों को भी खड़ी बोली में बोलने के लिए प्रेरित करें।

हिन्दी-शिक्षक के अतिरिक्त अन्य विषयों के शिक्षकों का भी यह दायित्व है कि वे भी अभ्यास पुस्तिकाओं के संशोधन के समय वर्तनी गत त्रुटियों के संशोधन पर विशेष ध्यान दें तथा बच्चों से बात करते समय शुद्ध खड़ी बोली का ही प्रयोग करें।

छात्रों की हर प्रकार की त्रुटियों का संशोधन तत्काल ही कर देना चाहिए। यह संशोधन पठन, वाचन एवं लेखन कार्य के समय पर यथा वसर तुरन्त कर देना चाहिए। छात्रों की सामान्य त्रुटियों का संशोधन सामूहिक रूप से किया जाय। संशोधन के साथ छात्रों को उस त्रुटि के कारण से भी अवगत करा दिया जाय।

प्रशिक्षण विद्यालयों के अध्यापकों से भी अनुरोध है कि वे अध्यापकों के प्रशिक्षण के समय प्रस्तुत पुस्तिका का सहायक पुस्तक के रूप में प्रयोग करें। इससे छात्रों की वर्तनीगत त्रुटियों के निराकरण में उन्हें अवश्य ही आवश्यक सहायता मिलेगी।

विषय-प्रवेश

लेखन की दृष्टि से भाषा दो प्रकार की होती है—ध्वन्यात्मक या अक्षरात्मक तथा वर्णात्मक। ध्वन्यात्मक भाषा में प्रत्येक वर्ण का संयोजन ध्वनि के आधार पर होता है और लिखने के बाद उन वर्णों के अनुसार ही उस शब्द का उच्चारण होता है। हिन्दी ध्वन्यात्मक भाषा है और अंग्रेजी वर्णातमक। वर्णात्मक भाषा में एक वर्ण का प्रयोग कई ध्वनियों के लिए होता है। कुछ वर्णों को मिलाकर अलग ध्वनियाँ भी होती हैं। हिन्दी में प्रत्येक वर्ण की अपनी एक निश्चित ध्वनि है और एक वर्ण केवल एक ही उच्चारण या ध्वनि के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे कमल-कलम-दोनों शब्दों में वर्णों का क्रम बदला हुआ है और वर्णों के अनुसार ही उनका उच्चारण हो रहा है।

हिन्दी में प्रयुक्त नागरी लिपि में व्यंजनों के साथ स्वरों को संयुक्त करने के लिए मात्राओं का प्रयोग किया जाता है। **मात्राएँ स्वरों को प्रतीक हैं।** तात्पर्य यह है कि हिन्दो भाषा का प्रत्येक शब्द अपने उच्चारण एवं ध्वनि के अनुसार ही लिखित रूप धारण करता है अर्थात् शब्द में अक्षरों का नियोजन उनके मानक उच्चारण के अनुसार ही होता है। अतः नागरी लिपि के माध्यय से मानक उच्चारण के अनुसार ध्वनियों का नियोजन एवं लेखन ही वर्तनी है। मानक उच्चारण के अनुसार लेखन का तात्पर्य यह है कि शब्दों का लिखितरूप स्थान विशेष या व्यक्तिविशेष के उच्चारण के अनुसार न चलकर शिक्षित एवं शिष्टजन के मानक या व्याकरण सम्मत उच्चारण के अनुसार चलता है। पहले 'वर्तनी' शब्द के लिए—अक्षर-विन्यास, वर्ण-विन्यास या अक्षरी शब्दों का प्रयोग होता था। अंग्रेजी में इसे 'स्पेलिंग' तथा उर्दू, सिन्धी, कश्मीरी में हिज्जे' कहा जाता है।

वर्तनी शब्द संस्कृत की 'वृत' धातु से बना है। 'वर्तनी' का अर्थ 'आगे बढ़ना' है। 'सरणि' और मार्ग के अर्थ में प्रयुक्त 'वर्त्म' शब्द इसी से बना है। विद्वानों की धारणा है कि 'वर्तनी' संस्कृत का मूल शब्द नहीं है—यह वृत् + मनि = वर्त्मनि या 'वर्त्मनी' में 'म' के लोप से बना है। इसका अर्थ है 'लेखन का मार्ग' अतः किसी भाषा का कोई शब्द

किसी वर्णमाला में जिस रूप में लिखा जाता है, वही उसकी वर्तनी है। इस प्रकार **शब्दों के प्रत्येक वर्ण के उच्चारण क्रम एवं व्याकरण के नियमों के अनुसार लेखन विधान को वर्तनी कहते हैं।**

हिन्दी वर्तनी का महत्व—हिन्दी भाषा को सीखने में वर्तनी का विशेष महत्त्व है। किसी भाषा को सीखने के लिए उसके उच्चरित एवं लिखित रूपों को समझना आवश्यक होता है। जिस भाषा के उच्चरित और लिखित रूपों में समानता होती है, उसे सीखना अपेक्षाकृत सरल और सुगम होता है, जिस भाषा के उच्चारण और लेखन में एकरूपता नहीं है उसको सीखना अपेक्षाकृत कठिन होता है। यही कारण है कि अंग्रेजी में 'स्पेलिंग' रटने की आवश्यकता होती है किन्तु हिन्दी में वर्तनी रटने की आवश्यकता ही नहीं होती — उच्चारण के अनुसार अक्षरों का संयोजन कर दीजिए, शब्द बन जायगा।

उच्चारण और वर्तनी—हिन्दी वर्तनी में उच्चारण का विशेष महत्त्व है। उच्चारण के अनुसार ही वर्तनी का निर्धारण होता है। क्योंकि उच्चारण ध्व**नियों** का होता है और **ध्वनियों के प्रतीक अक्षर** होते हैं। अक्षरों के लिखित रूप को ही '**वर्ण**' कहा जाता है। अशुद्ध उच्चारण से शब्दों का अर्थ ही बदल जाता है। हिन्दी में 'शूर' के स्थान पर 'सूर' 'शर' के स्थान पर 'सर' (सरोवर) 'वही' के स्थान पर 'बही' 'वाद' के स्थान पर 'बाद' कह दिया जाय तो शब्द का अर्थ ही बदल जायगा। आरम्भ में संस्कृत के ९९% शब्दों का उच्चारण एक ही रूप में होता था किन्तु एक प्रतिशत शब्द दो-तीन रूपों में उच्चरित होते थे। यही कारण है कि संस्कृत के कुछ शब्द आज भी दो रूपों में लिखे जाते हैं यथा—क्षोणि, क्षौणि-औषधि-औषध। इसी प्रकार संस्कृत में उच्चारण के आधार पर ही रेफ (र् ˚) के प्रयोग में द्वित्व वर्णों का प्रयोग होता था; यथा—कर्म्म, धर्म्म, कर्त्ता, हर्त्ता, वर्म्मा आदि किन्तु वर्तमान समय में इस प्रकार के द्वित्व प्रयोग समाप्त कर दिये गये हैं और इन्हें कर्म, धर्म, सूर्य, कर्ता, हर्ता, वर्मा आदि रूपों में लिखा जाने लगा है।

उच्चारण पर काल और स्थान का प्रभाव पड़ता है। शुद्ध उचारण वह है जिस पर काल और स्थान का प्रभाव न हो। अतः शुद्ध लेखन के लिए शुद्ध उच्चारण का होना आवश्यक है।

माध्यमिक कक्षाओं में वर्तनी सम्बन्धी समस्या

अपने ध्वन्यात्मक स्वरूप के कारण हिन्दी की नागरी लिपि निश्चय ही अन्य भाषाओं की अपेक्षा सीखने में सरल, सुगम, तथा अत्यन्त वैज्ञानिक लिपि है, फिर भी इसके लेखन में प्रायः त्रुटियाँ की जाती हैं। आश्चर्य तो यह है कि ये वर्तनीगत त्रुटियाँ न केवल माध्यमिक कक्षाओं वरन् स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्रों में भी मिलती हैं। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में भी वर्तनी के प्रयोग सम्बन्धी त्रुटियाँ देखने को मिल जाती हैं। वस्तुतः वर्तनी की समस्या हिन्दी लेखन में एक समस्या बन चुकी है, इस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियाँ प्राथमिक स्तर से चलकर पूर्वमाध्यमिक स्तर को पार करती हुई माध्यमिक स्तर तक आती हैं। माध्यमिक स्तर पर स्वतः प्राथमिक और पूर्वमाध्यमिक स्तर की बहुत सी त्रुटियाँ अभ्यास के क्रम में स्वतः सुधर जाती हैं, कुछ त्रुटियाँ यथावत स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर तक पहुँच जाती हैं। लेखन कार्य में अधिकाधिक सुधार का अवसर माध्यमिक स्तर तक ही रहता है। इसके बाद त्रुटियों के संशोधन का समय ही नहीं रह जाता।

इस प्रकार माध्यमिक स्तर, वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों के समाधान तथा शुद्ध अभ्यास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण स्तर है। इस स्तर पर यदि थोड़ा सा ध्यान देकर त्रुटियों का सुधार कर दिया जाय तथा शुद्ध अभ्यास करा दिया जाय तो निश्चय ही छात्रों की वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों का सरलता पूर्वक निराकरण हो जाय और छात्र शुद्ध लेखन द्वारा अपनी भावाभिव्यक्ति को अपेक्षाकृत अधिक प्रभावपूर्ण बनाने में समर्थ हो जायँ।

वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों के सुधार की दृष्टि से माध्यमिक स्तर के महत्व को समझते हुए, विभिन्न विद्यालयों के छात्रों की उत्तर पुस्तिकाओं से अशुद्धियों का संकलन किया गया है। छात्रों को प्रत्यक्ष रूप से एक निश्चित शब्दावली का श्रुतलेख भी लिखवाकर उनकी वर्तनीगत त्रुटियों को एकत्र किया गया है। त्रुटियों के संकलन में संस्थान के सम्पर्क में आने वाले अध्यापकों के अनुभव का भी उपयोग किया गया है।

माध्यमिक स्तर पर अभ्यास का अधिकाधिक अवसर सुलभ कराने

की दृष्टि से पहले वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों का वर्गीकरण किया गया है। फिर उसके अनुसार अशुद्ध एवं शुद्ध शब्द दिये गये हैं। इन अशुद्धियों के कारणों का निर्देश करते हुए, वहीं समाधान प्रस्तुत किया गया है, साथ ही समाधान के बाद वर्गीकरण के अनुसार ही छात्रों से शुद्ध अभ्यास कराने के लिए शुद्ध शब्दों की तालिका भी प्रस्तुत की गयी है।

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित विद्यालयों के छात्रों से अशुद्धियों के नमूने संकलित किये गये हैं—

कस्तूरबा बालिका विद्यालय हा० से० स्कूल, वाराणसी, गुरुनानक खालसा इंटर कालेज वाराणसी, राजकीय क्वींस इण्टर कालेज वाराणसी स्वामी देवानन्द इण्टरकालेज मठलार देवरिया, तथा बालिका विद्या मंदिर उ० मा० विद्यालय, नैनीताल।

माध्यमिक स्तर पर मिलने वाली वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों का वर्गीकरण एवं शुद्ध शब्दों की तालिका

माध्यमिक स्तर (कक्षा ९, १०, ११, १२) में मिलने वाली वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों का वर्गीकरण निम्नलिखित रूप में किया गया है। यहाँ अशुद्धियों के कतिपय उदाहरण देकर शुद्ध अभ्यास के लिए उस वर्ग के अन्य बहुत से शब्दों की तालिका भी दी जा रही है। साथ ही इन अशुद्धियों के प्रमुख कारण एवं उनके निराकरण के उपाय भी सुझाये जा रहे हैं।

१—स्वर नियोजन सम्बन्धी त्रुटियाँ

अ—स्वर नियोजन—स्वर वर्णों के नियोजन में माध्यमिक स्तर पर अपेक्षाकृत कम अशुद्धियाँ मिलती हैं फिर भी ह्रस्व-दीर्घ एवं वृद्धि सम्बन्धी त्रुटियाँ मिलती हैं, यथा—

अशुद्ध	शुद्ध
(आधीन)	अधीन
(आध्यात्म)	अध्यात्म
(अदेशानुसार	आदेशानुसार
(अध्यात्मिक)	आध्यात्मिक
(अकस्मिक)	आकस्मिक

(इन्धन)	ईन्धन
(इमान)	ईमान
(औलम्बन)	अवलम्बन

समाधान—अधीन के स्थान पर 'आधीन' तथा 'अवलम्बन' के स्थान पर 'औलम्बन' जैसी अशुद्धियाँ प्राय: शुद्ध ज्ञान के अभाव में होती है। 'स्वाधीन' के आधार पर आरम्भ में 'अधीन' (अशुद्ध) का भ्रम हो जाता है और अन्त तक बना रहता है।

अभ्यास हेतु शुद्ध शब्दों की तालिका

अवधि	आषाढ़	**आजमाइश**	इष्ट	उच्छ्वास
अवधी (भाषा)	आईना	आतिथ्य	ईंगुर	**उपर्युक्त**
अवली	आकांक्षा	**आध्यात्मिक**	**ईर्ष्या**	**उष्ण**
अवश्यंभावी	आकर्षण	आनुषंगिक		
अवांछनीय	आकृति	**इमारत**	उक्ति	**उषा**
अवदान	आगाह	इलायची	उऋण	**ऊँचाई**
अभ्यर्थी	**आग्नेय**	इक्यावन		

आ—स्वर-मात्राविधान सम्बन्धी त्रुटियां--मात्राओं का विधान नागरी लिपि की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है। इसी कारण वह वर्णात्मक लिपियों से अधिक विकसित लिपि मानी जाती है। मात्राएँ विभिन्न स्वरों का प्रतिनिधित्व करती हैं। वे स्वतन्त्र स्वर नहीं हैं। विभिन्न स्वरों के चिह्न के रूप में इनका प्रयोग होता है। ये व्यंजनों के साथ जुड़कर अपने से सम्बद्ध स्वरों की उपस्थिति की सूचना देती हैं। इनकी सहायता से व्यंजनों को अक्षरात्मक (सिलेबिक) रूप मिलता है। मात्राविधान सम्बन्धी अधिकांश त्रुटियाँ प्राथमिक तथा पूर्व माध्यमिक स्तर पर मिलती हैं। किन्तु इ–ई, उ–ऊ, ए–ऐ तथा ओ–औ की मात्राओं से सम्बन्धित त्रुटियाँ इस स्तर पर भी मिलती हैं—

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
(सिद्धी)	सिद्धि	(अधिनीयम)	अधिनियम
(वृद्धी)	वृद्धि	(शनीवार)	शनिवार
(रीती)	रीति	(गितिका)	गीतिका
		(शशी)	शशि

(नीयमीकरण)	नियमीकरण	(गुरू)	**गुरु**
(रूपया)	**रुपया**	(रूचि)	**रुचि**
(सरोरूह)	सरोरुह	(दुरूपयोग)	**दुरुपयोग**

समाधान—मात्राविधान सम्बन्धी त्रुटियाँ **अशुद्ध उच्चारण** अभ्यास के कारण होती हैं। वे 'नीती' 'प्रीती' जैसे अशुद्ध शब्दों का उच्चारण करते हैं और लिखते समय यथावत लिख देते हैं, जिसके कारण त्रुटियाँ होती हैं। अतः शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराना चाहिए।

(क) अभ्यास हेतु शुद्ध शब्दों की तालिका

आदि इ	इ और इ	ई-ई	ई-इ	मध्य-इ	अन्त्य-इ
किसान	सिद्धि	बीती	नीति	पठित	पति
विधान	विजित	गीली	प्रीति	ध्वनित	गति
निधान	सिंचित	पीली	रीति	कुलिश	रात्रि
विधायक	लिखित	सजीली	भीति	**रंजित**	मुनि
विधा	**निन्दित**	बतीसी	गीतिका	अनिद्रा	ध्वनि
विकार	चिह्नित	भागीरथी	**कीर्ति**	अनिच्छा	**भूमि**
दिशा	किशमिश	भगीरथ	सीकिया	अनित्य	**शशि**
विकास	विविध	भीलनी	दीधिति	**अधिनियम**	पवि
	शिथिल	मनीषी	दीपिका	**शनिवार**	**कवि**

(ख) माध्यमिक स्तर पर उ–ऊ की मात्राओं के नियोजन में 'र' पर ऊ या उ की मात्राओं सम्बन्धी अधिक त्रुटियाँ मिलती हैं। अतः केवल उनके ही शुद्ध रूप यहाँ दिये जा रहे हैं—

आदि रु	आदि रू	मध्य रु	मध्य रू	अन्त्य रु	अन्त्य रू
रुचि	रूप	अरुचि	आरूढ़	अरु	मारू
रुपया	रूपा	अरुण	उपरूपक	**गुरु**	बाजारू
रुँधना	रूपराशि	अरुन्धती	**दुरूह**	तरु	घुँघरू
रुष्ट	रूखा	करुण	**निरूपण**	**सुचारु**	रूबरू
रुखाई	रूठना	**गरुड़**	बारूद	**भीरु**	**शुरू**
रुधिर	**रूमाल**	**वरुण**	**विरूप**	**उरु**	**कंगारू**
रुदन	रूह	तरुण	कुरूप	पुरु	जुझारू

रुपहला	रूई	तरुवर	गरूर	ऊरु (जंघा)
रुद्र	रूस	दारुण	जरूरत	
रुद्राणी	रूल	दुरुपयोग	**जागरूक**	
रुग्ण	रूढ़	तन्दुरुस्त	मौरूसी	
रुग्णावस्था	रूढ़ि	द्विरुक्त	**रंगरूट**	
रुद्ध		निरुत्तर	रंग-रूप	
रुहेलखण्ड		परुष	स्वरूप	
रुतबा		पुरुष		
रुनझुन		मरुस्थल		
रुस्तम		मारुत		
		शुरुआत		

(इ) ऋ, ऋयुक्त व्यंजन तथा र युक्त व्यंजनों के योग में ह्रस्व 'इ' सम्बन्धी त्रुटियाँ--

'क्रिया' और 'कृपा', 'प्रिया' और 'पृष्ठ', 'ऋतु' और 'रिक्त' आदि शब्दों के लेखन में प्रायः त्रुटियाँ होती हैं। परिणामतः भ्रम के कारण निम्नलिखित त्रुटियाँ मिलती हैं--

(क्रिपा)	कृपा	(क्रितज्ञ)	कृतज्ञ
(कृया)	क्रिया	(कृस्तान)	क्रिस्तान
(त्रिण)	तृण	(त्रितीय)	तृतीय
(मस्रिण)	मसृण	(निरशंस)	नृशंस
(द्रिढ़)	दृढ़	(म्रग)	मृग
(त्रितीय)	तृतीय	(त्रयमासिक)	त्रैमासिक

समाधान---क्रिया, कृत, कृपा, कृष्ण, कृश आदि कुछ गिने-चुने मूल शब्द हैं जिनसे अनेक शब्दो का निर्माण हुआ है। 'क्रिया' में कृ + श-रिङ् + आदेश है। 'कृपा' में कृप् + अङ्, टाप् है। क्रिया की तरह ही 'कृत' में कृ + क्त है। दोनों में मूल क्रिया धातु 'कृ' ही है इसी कारण यहाँ भ्रम होता है। **'कृ' धातु से 'क्रि' के रूप में मात्र 'क्रिया** शब्द ही **बनता है।** क्रियार्थ, क्रियात्मक, क्रिया-कलाप आदि अनेक शब्द इसी से बनते हैं। 'कृत' कृतज्ञ' कृतार्थ आदि अन्य शब्द मूल धातु के मूल रूप के अनुसार ही बनते हैं। अतः इनके शुद्ध अभ्यास द्वारा इन्हें सुधारा जा सकता है। 'ऋ' का प्रयोग तत्सम शब्दों के साथ ही होता है 'रि' का

तत्सम-तद्भव दोनों मे। 'त्रय' का प्रयोग 'तीन' के अर्थ में होता है किन्तु सामासिक रूप में 'त्रि' का प्रयोग होता है। 'तृतीय' का अर्थ हैं 'तीसरा'।

अभ्यास हेतु शुद्ध शब्दों की तालिका--'त्रिमास' से 'त्रैमासिक' बनता है अतः 'त्रयमासिक' अशुद्ध है।

ऋ और रि		**कृ और क्रि**		**मृ और म्रि**	
ऋक्ष	अन्तरिक्ष	कृत	क्रिया	मृग	
ऋग्वेद	रिक्त	कृतज्ञ	क्रियार्थक	मृगांक	
ऋचा	अतिरिक्त	कृतघ्न	क्रिस्तान	मृगया	
ऋजु	रिपु	कृतार्थ	क्रियान्वयन	मृगेन्द्र	
ऋण	रिपुंजय	कृत्रिम	क्रियेन्द्रिय	मृत	
ऋणात्मक	रिपुसूदन	कृपण	क्रियमाण	मृत्यु	म्रियमाण
ऋतु		कृपा			
ऋद्धि		कृपालु			
ऋषभ		कृपया			
ऋषि		कृमि			
ऋष्यमूक		कृश (दुर्बल)			
		कृषक			
		कृष्ण			
		कृशानु (अग्नि)			

पृ और प्रि		**तृ और त्रि**		
पृथक	प्रिय	तृण	त्रिकाल	त्रिया
पृथक्करण				
पृथ्वी	प्रिया	तृणावर्त	त्रिकाण्ड	त्रिया चरित्र
पृथु (विस्तृत)				
पृष्ठ	प्रियवर	तृतीय	त्रिकोण	
		तृतीयांश	त्रिमूर्ति	
पृष्ट (पूँछा हुआ)	प्रियंवद	तृप्त	त्रिलोचन	
पृच्छक (पूछने वाला)		तृषा	त्रिलोक (त्रैलोक्य)	
पृच्छा (पूछे हुए के अनुसार)		तृष्णा	त्रिकालदर्शी	
			त्रिगुण	
			त्रिभुवन	
			त्रिमास (त्रैमासिक)	

ऋ युक्त कुछ अन्य शब्दों का अभ्यास

गृहस्थ	नृत्य	मृदंग	शृंखला
गृहिणी	नृशंस	मृषा	शृंगार
घृणा	बृहत	वृन्द	सृजन
घृत	बृहन्नला	वृक्ष	सृष्टि
दृग्पाल	भृंग	वृत्तान्त	हृदय
दृगंचल	भृगु	वृथा	स्पृश्य
दृढ़	भृत्य	वृश्चिक	सुहृद
दृश्य	मृतक	वृषभ	हृष्ट-पुष्ट
धृष्टता	अनुगृहीत	वृष्टि	
	संगृहीत		

(ई) शब्द के मध्य तथा अन्त में 'य' पर इ–ई या ए की मात्रा के स्थान पर स्वर इ या ई, या ए के नियोजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
(स्थाइत्व)	स्थायित्व	(स्थाई)	स्थायी
(उत्तरदाइत्व)	उत्तरदायित्व	(उत्तरदाई)	उत्तरदायी
(ज्ञानदाइनी)	ज्ञानदायिनी	(आई)	आयी
(विधाइनी)	विधायिनी	(दिलाई)	दिलायी
(कविइत्री)	कवयित्री	(आए)	आये
(रचइता)	रचयिता	(आइये)	आइए

समाधान :—१–'उत्तरदायी', 'स्थायी', 'दायित्व', 'स्थायित्व' शब्द संस्कृत के हैं इन्हें सदैव इनके तत्सम रूप में ही लिखना चाहिए।

२–आये, गये, गयी, नया, नयी, के सम्बन्ध में ध्यान दिया जाय कि जिस क्रिया का भूत कालिक एवं एक वचन पुल्लिग बहुवचन रूप 'या' से समाप्त हो, उसका स्त्रीलिंग रूप 'यी' से होगा, पुल्लिग बहुवचन रूप 'ये' (गये) से लिखा जायगा। विशेषण शब्द 'नया' से 'नयी' बनेगा।

३–आदरार्थक क्रियाओं में 'इ ए' प्रत्यय जुटता है अतः आइए, जाइए,

चाहिए, कीजिए, चलिए-रूप ही शुद्ध है। एकरूपता के लिए इनका पालन किया जाना चाहिए।

४-**लिये**-**लिए**-'**लिये**' (क्रिया) '**लिए**' (अव्यय) मैंने उसके **लिए** चार ग्रन्थ '**लिये**'-यहाँ दोनों अपने स्थान पर शुद्ध हैं किन्तु स्थान बदल देने पर ये गलत हो जायँगे।

(उ) ए-ऐ तथा ओ-औ सम्बन्धी त्रुटियाँ

प्रत्यय-प्रयोग और शुद्ध शब्द-ज्ञान के अभाव में इस वर्ग में निम्न-लिखित त्रुटियाँ मिलती हैं—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
(एतिहासिक) (इतिहासिक)	ऐतिहासिक	(औतार)	अवतार
(उद्योगिक)	औद्योगिक	(अवजार)	औजार
(एक्य))	ऐक्य	(औलम्ब)	अवलम्ब
(कयलास)	कैलास	(औनति)	अवनति
(अतेव)	अतएव		

समाधान—इक प्रत्यय लगने पर 'इ' से आरंभ होने वाले शब्दों में 'इ' का ऐ हो जाता है। इसी प्रकार 'त्रिमास' से त्रैमासिक इह + इक = ऐहिक, इच्छा + इक = ऐच्छिक बनता है। इक प्रत्यय के योग में शब्द के आरम्भ का अ-आ, इ-ई, उ-ऊ क्रमशः आ, ऐ तथा औ में बदल जाता है। इसी प्रकार परमाणु + इक = पारमाणविक हो जाता है। **औजार, औचक, औझक, औचित्य, औत्सुक्य, औदार्य** आदि शब्दों का पृथक-पृथक अभ्यास करा देना चाहिए। इसमें कुछ स्वतंत्र शब्द है यथा औजार औझक, औचक अन्य प्रत्यय के कारण 'उ' से 'औ' के रूप में परिवर्तित हुए हैं। अवरोह तथा औजार सम्बन्धी त्रुटियाँ अशुद्ध उच्चारण के कारण होती हैं। इनका शुद्ध अभ्यास किया जाना चाहिए।

अभ्यास हेतु शुद्ध शब्दों की तालिका

ए	ऐ	अव युक्त	औ युक्त
एड़ी	ऐठना	अवरोध	औजार

एहतियात	ऐक्य	अवरोह	औचित्य
एतराज	ऐतिहासिक	अवलम्बन	औटाना
एशिया	ऐरावत	अवशिष्ट	औदार्य
एषणा	ऐश्वर्य	अवशेष	औघड़
एकाधिकार	ऐहिक	अवसर	औढर
एकांत	ऐकान्तिक	अवगाहन	औरेब
एकाकार	ऐश-आराम	अवगुण	नौसादर
एकादशी	कैकेयी	कवच	कौआ
एकीकरण	कैदखाना	कवल	कौवाली
एकेश्वर	दैनिक	भवसागर	कौटिल्य
एकाएक	दैन्य	भवन	कौटुम्बिक
एकाकी	दैहिक	अवधूत	मौलवी
एड़ी	नैसर्गिक	अवसान	मौर
एतदर्थ	नैवेद्य	अवधान	भौगोलिक
एतादृश	नैषध	अवधेश	पारमाणविक
एहसान	वैयक्तिक	अवधारणा	औपसर्गिक
	वैमनस्य	अवयव	औषधालय

२—व्यंजन प्रयोग सम्बन्धी त्रुटियाँ

माध्यमिक स्तर पर व्यंजन प्रयोग सम्बन्धी त्रुटियाँ अपेक्षाकृत कम मिलती हैं। फिर भी छ-क्ष, ब-व, ट-ठ, न-ण' तथा श, ष, स, के प्रयोग में वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ निम्नलिखित रूप में मिलती हैं—

अ-छ-क्ष सम्बन्धी अशुद्धियाँ

छ के स्थान पर क्ष–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
(क्षात)	छात्र	(छीण)	क्षीण
(इक्षा)	इच्छा	(छति)	क्षति
(स्वक्छ)	स्वच्छ	(छेत्र)	क्षेत्र

क्ष के स्थान पर छ

(रच्छा)	रक्षा	(छितिज)	क्षितिज

(छत-विच्छत)	क्षत-विक्षत	(परीच्छा)	परीक्षा
(यक्छ)	यक्ष	(अक्छुण)	अक्षुण्ण

समाधान—छ-क्ष अथवा क्ष के स्थान पर छ सम्बन्धी त्रुटियाँ शुद्ध उच्चारण अभ्यास के अभाव में होती है। अतः 'छ' तथा 'क्ष' के अन्तर को स्पष्ट करते हुए बताना चाहिए कि क्ष = क् + ष ध्वनि है इसका उच्चारण मूर्धा की सहायता से होता है जब कि छ का उच्चारण तालु की सहायता से होता है।

तद्भव शब्दों का तत्सम रूप लिखते समय 'छ' के स्थान पर 'क्ष' किया जाता है; यथा 'वृच्छ' का 'वृक्ष' अतः सभी स्थानों पर 'छ' का 'क्ष' न कर दिया जाय क्योंकि 'छ' से भो तत्सम शब्द बनते हैं। अतः दोनों रूपों को समझकर लिखने का अभ्यास कराया जाय।

अभ्यास हेतु शुद्ध शब्दों की तालिका

क्ष			
क्षण	गवाक्ष	लक्ष्मण	छन्द
क्षत (घाव)	ऋक्ष	लक्ष्मी	छटा
क्षति	**चक्षु**	**लक्ष** (लाख)	**छत** (कमरे की छत)
क्षत्र(आधिपत्य)	**भिक्षा**	लक्ष्य (उद्देश्य)	छपा (छपना से)
क्षपा (रात्रि)	शिक्षा	लक्षपति	**छत्र** (छाता मुकुट)
क्षय	दीक्षा	**उपलक्ष्य**	छद्म
क्षमा	परीक्षा	विलक्षण	छद् (ढकनेवाली)
क्षिति	**प्रतीक्षा**	यक्षेन्द्र	छवि
क्षीर	**आकांक्षा**	परीक्षा केन्द्र	छल
क्षुद्र	अक्षौहिणी	आक्षेप	छिद्र
क्षुधा	एकक्षत्र	संक्षेप	छेकानुप्रास
क्षुब्ध	क्षत्रपति (राजा)		छत्रसाल

आ-व—व सम्बन्धी त्रुटियाँ

व के स्थान पर ब		**ब के स्थान पर व**	
अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
(बिख्यात)	विख्यात	वीभत्स	**बीभत्स**

बिषय	विषय	वुतपरस्त	बुतपरस्त
बिबाद	**विवाद**	वाह्य	**बाह्य**
बिचार	**विचार**	वाधा	**बाधा**
बाचन	**वाचन**	वन्धन	**बन्धन**
		वावजूद	**बावजूद**
बैज्ञानिक	**वैज्ञानिक**	सम्वन्ध	**सम्बन्ध**
		वेकायदे	**बेकायदे**
		वनाम	बनाम

समाधान—ये त्रुटिया आरम्भ से ही शुद्ध **उच्चारण अभ्यास** की कमी के कारण होती हैं। इसके सम्बन्ध में असावधानी भी पर्याप्त रूप में दिखायी पड़ती है। कुछ लोगों की आरम्भ से ही 'व' के स्थान पर भी 'ब' या सर्वत्र 'व' लिखने की आदत पड़ जाती है। इस प्रकार के कुसंस्कार को मिटाने का प्रयास किया जाना चाहिए साथ ही वि, 'अव' उपसर्ग तथा उर्दू उपसर्ग, बे, बा ब तथा बद से बनने वाले शब्दों का अभ्यास कराना चाहिए। 'वि' से ही प्रत्यय सम्बन्ध में 'वै' जैसे विज्ञान से 'वैज्ञानिक' वनता है अतः 'वि' के स्थान 'बि' नहीं लिखना चाहिए।

शुद्ध अभ्यास हेतु शब्दों की तालिका

क—ब से बने प्रमुख शब्द

बंकिम	**बिन्दी**	ब्रह्म	**ब+व**
बंगाली	**बिम्ब**	ब्रह्मांड, **ब्राह्मण**	**बावन**
बंडल	बिक्री	ब्राह्मी	बावजूद
बन्द बन्दगी	बिजलो	बादशाह	बावरची
बंदिश	**बिलकुल**	**बानर**	बावला
बन्धक	**बीमार** बीमा	ब्रह्मावर्त	बावली (तालाब)
बन्धु	**बुजुर्ग**	**ब्रह्मास्त्र**	**बुधवार**
बगावत	बुद्धिमान	ब्राह्म मुहूर्त	
बध	बुभुक्षित (भूखा) ब्रह्मानन्द		
बड़वाग्नि	**बोध**, बौद्ध		

ख—उर्दू उपसर्गों से बने शब्दों का अभ्यास

'बे' (रहित) उपसर्ग युक्त,	बा (युक्त)	ब (सहित)	बद (खराब)
बेसुध	बाकायदे	खुद-बखुद	**बदनाम**
बेहद	बाअदब	बखूबी	बदमाश
बेकार	बाइज्जत	बखैरियत	बद गुमान
बेसमझ	**बावजूद**	**बगैर**	बदअमनी
बेरहम	बामुरौवत	बजाय	
बेहाल	बावफा	बसबब	बद इन्तजामी
बेहोश	बाअसर	बहैसियत	बदनसीब
बेदम		**बदौलत**	बदजबान
बेतहासा		बजाय	बदसूरत
बेखटके			**बदतर**
बेईमान			

ग—'व' से बनने वाले कुछ शब्दों का अभ्यास

व	'वि' उपसर्ग से बने शब्द		'अव' उपसर्ग युक्त
वंचित	विमान	वैवाहिक	अवगाहना
वंशी	विलोम	वैषम्य	अवगुठंन
वकालत	**विध्वंस**	व्यंजक	अवगुण
वक्तव्य	विनम्र	व्यक्ति	अवढर
वक्रोक्ति	विनिमय	व्यतिरेक	अवतरण
वक्ष	विश्रांत	व्यवस्था	अवतारणा (उतारना)
वचन	विश्लिष्ट	**व्यवधान**	अवतीर्ण
वज्र	**विचार**	व्याकरण	अवधारणा
वन	विमर्श	व्याप्त	अवनयन
वत्सल	**विशिष्ट**	व्यामोह (मोह)	**अवयव**
वदन	विजन	व्याल (सर्प)	**अवलम्बन**
वयस्क	वैज्ञानिक	**व्यायाम**	अवस्था
वसन्त	**वैधानिक**	व्यवसाय	**अवहेलना**
वरुण	वैचारिक		अवसान
वर्चस्व	वैमानिक		अवशिष्ट (बचा हुआ)

वर्जित	वैकल्पिक	अवज्ञा
वर्णनीय	वैकुंठ	अवधूत
वांछनीय	वैतनिक	अवरोधक
वाटिका	वैभव	अवलोकन
वातावरण	**वैयक्तिक**	अवरुद्ध

इ—श-ष-स के प्रयोग सम्बन्धी त्रुटियां

इनके प्रयोग के सम्बन्ध में माध्यमिक स्तर पर अपेक्षाकृत अधिक त्रुटियां मिलती हैं। श—ष तथा श—स में प्राय: वर्ण-विपर्यय कर दिया जाता है और शब्द गलत हो जाता है।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
(आसीरवचन)	**आशीर्वचन**	सुशुप्त	सुषुप्त
(आसिर्वाद)	**आशीर्वाद**	सुश्रूषा	**शुश्रूषा**
(शेश)	शेष	सुशाशन	सुशासन
(विशेसज्ञ)	**विशेषज्ञ**	शौहार्द	**सौहार्द**
(विभीशका)	विभीषिका	प्रसंशा	**प्रशंसा**
(बहिस्कार)	**बहिष्कार**	शीर्सक	**शीर्षक**
(तिरष्कार)	**तिरस्कार**	शीर्शासन	**शीर्षासन**
(विसम)	विषम	अनुशरण	**अनुसरण**

समाधान—उच्चारण अभ्यास तथा शुद्ध **व्याकरण-ज्ञान** के अभाव में इस प्रकार की त्रुटियां होती हैं। कभी-कभी बच्चों के मनमें यह ध्यान रहता है कि 'प्रशंसा' तथा 'आशीष' में क्रमशः श—स तथा श—ष हैं किन्तु लिखते समय जानकारी के अभाव में वर्ण विपर्यय हो जाता है और वर्तनी सम्बन्धी त्रुटि हो जाती है। इसके लिए निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है—

- श - ष—स मूल तत्सम शब्दों में सदैव वर्णमाला के क्रम में ही आते हैं यथा शीर्षासन किन्तु सु, स, सं उपसर्ग 'श' के पूर्व आयेंगे। यथा—सुशासन, सशक्त, संशय। **(अभ्यास क)**
- ऋ या ऋ युक्त व्यंजन के बाद प्राय: 'ष' आता है किन्तु कुछ शब्दों में 'श' भी आता है। अत: इनका उचित अभ्यास कराया जाय। (अभ्यास ग)

- च वर्ग के पूर्व 'श' और ट वर्ग के पूर्व 'ष' आता है। केवल सु, स, सम् उपसर्ग के रूप में ही च वर्ग के पूर्व 'स' आता है यथा 'सचल' 'सुचालक' 'संचालक'। (अभ्यास घ)
  क के पूर्व स् और ष दोनों आते हैं। क के पूर्व 'स्' तभी आता है जब स् के पूर्व अ या आ हो या कोई स्वर हो यथा 'स्कन्द' तस्कर, भास्कर। स् के पूर्व अ आ के अतिरिक्त अन्य स्वर रहने पर क के पूर्व 'ष्' हो जाता है। (अभ्यास ङ)
- व्यंजन सन्धि तथा विसर्ग सन्धि सम्बन्धी ज्ञान को पुष्ट किया जाय। शुद्ध अभ्यास हेतु दी गयी तालिका का अभ्यास कराया जाय।
- संस्कृत शब्द रचना में किसी शब्द के आदि 'स' में उसके पूर्व अ आ के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर आने पर परिवर्तन हो जाता है यथा वि+सम = विषम। देखिए अभ्यास च।
- श—स के स्वल्पान्तर युग्मों का अभ्यास कराया जाना चाहिए। (अभ्यास छ)

अभ्यास हेतु शब्दों की तालिका

क—श-ष तथा श-स अपने क्रम में तथा उपसर्ग के साथ

श—ष	श—स	स, सु, सं उपसर्ग युक्त
शेष	शासन	सुशासन
शोषक	शासक	सुशील
शीर्षक	शास्त्र	सशक्त
आशीष	नृशंस	संशय
शुष्क	प्रशंसा	सुषेण
शिष्य	अधिशासी	सश्रय
शिष्टाचार	(संस्कृत का 'वसिष्ठ' शब्द इसका अपवाद है)	संश्लेषण
		सुश्रुत

ख—श-श, ष-ष तथा स-स युक्त शब्द

श-श	ष-ष	स-स
शश (खरगोश)	षष्ठ	संसर्ग
शशांक	षष्ठी	संसार

शशि	संसिक्त
शाश्वत	संसृति
शिशिर	संस्कार
शिशु	ससुर
शीशम	ससुराल
शीशा	सिसकना
श्रीश (विष्णु)	सिसोदिया
शैशव	सुस्थिर
	अफसोस

ग--ऋ या ऋ युक्त व्यंजन के बाद ष तथा श

कुछ शब्दों में ऋ के बाद 'श' भी आता है—

[ऋ के बाद स का प्रयोग नहीं होता]

ऋषि	**कृश** (दुबला)
ऋषभ	कृशाश्व
कृषि	नृशंस
तृषा	भृश (बहुत)
सृष्टि	दृश्य
पृष्ठ	**स्पृश्य**
हृष्ट	कृशानु (अग्नि
वृषभ	**वृश्चिक**

घ—तत्सम शब्दों में टवर्ग के पूर्व 'ष' और चवर्ग के पूर्व हमेशा 'श' का प्रयोग होता है –

ष		**श**
षट	शची (इन्द्राणी)	आश्चर्य
षडानन	शचीन्द्र (इन्द्र)	पश्चात्
षोडश	शुचि	पश्चात्ताप
अष्ट	शौचालय	प्रायश्चित्त
षष्ठ	निशिचर	तपश्चर्या
कष्ट	निश्चल	पश्चिम
नष्ट	निश्छल	वृश्चिक
भ्रष्ट		

ङ--क के पूर्व 'स्' और ष् दोनों का प्रयोग होता है—

क के पूर्व स्	क के पूर्व ष
स्कन्द	परिष्कार
स्कन्धावार	कनिष्क
नमस्कार	बहिष्कार
तस्कर	निष्कपट
संस्कार	निष्काम
संस्कृत	निष्क्रिय
संस्करण	निष्कर्ष
तिरस्कार	निष्कामन
पुरस्कार	निष्क्रमण
यास्क (मुनि)	किष्किन्धा
भास्कर	शुष्क
श्रेयस्कर	पुष्कर (तालाब)
	पुष्कल (अधिक)
	दुष्कृत

च--स का ष के रूप में परिवर्तन

स का ष		स में परिवर्तन नहीं
(अभि + सेक)	अभिषेक	असम
(नि + सिद्ध)	निषिद्ध	असमानान्तर
(वि + सम)	विषम	आसक्त
(सु + सुप्ति)	सुषुप्ति	विस्मरण
		अनुसरण
		विसर्जन
		विसर्ग

छ—श-स के स्वल्पान्तर युग्म

शादी	सादी	शूर	सूर
शान्त	सान्त (अन्त सहित)	शर (बाण)	सर (सरोवर)
शाल	साल		
शाला	साला	शंकर	संकर (वर्ण संकर)

शेर	सेर	शत	सत
		पाश	पास

ज—व्यंजन सम्बन्धी कुछ अन्य अशुद्धियों का शुद्ध अभ्यास

ड के स्थान पर ड़		ड़-ढ़ के स्थान पर ड-ढ	
अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
रेड़ियो	रेडियो	पहाड	पहाड़
सोड़ा	सोडा	घोडा	घोड़ा
रोड़	रोड	कडाह	कड़ाह
ड़ोल	डोल	गाडी	गाड़ी
ढ़ाल	ढाल	चढाई	चढ़ाई
ढ़क्कन	ढक्कन	पढाई	पढ़ाई

न के स्थान पर ण

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
गुन	गुण	भरन	भरण
प्रान	**प्राण**	चरन	चरण
वीना	वीणा	प्रमान	प्रमाण
प्रनाम	प्रणाम	रामायन	**रामायण**
कन	**कण**	विभीषन	**विभीषण**
प्रन	**प्रण**	प्रदूषन	प्रदूषण

['न' का 'ण कुछ शब्दों में 'अन' प्रत्यय के योग में न का ण हो जाता है यथा राम + अयन = रामायण, चर् + अन = चरण किन्तु चल् + अन = चलन होता है। नियम—**ऋ, र्, ष्, के बाद 'न' हो और इनके बीच कोई स्वर, कवर्ग, पवर्ग का कोई वर्ण या य व ह हो तो 'न' का 'ण हो जाता है।**] इसी प्रकार रामेण, रामाणाम, बालकेन, बालकानाम।

३—संयुक्ताक्षर सम्बन्धी त्रुटियां

हिन्दी के शब्दों में दो-दो, तीन-तीन वर्णों को एक में संयुक्त करके लिखा जाता है। 'उज्ज्वल' तथा 'मत्स्याकार' जैसे शब्दों में दो-दो संयुक्ताक्षर हैं। इसी प्रकार 'विद्या' तथा 'सम्मान' में भी संयुक्ताक्षर है। संयुक्ताक्षरों के लेखन में व्याकरणि नियमों की जानकारी के अभाव में बच्चों में निम्नलिखित रूप में त्रुटियाँ मिलती हैं।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
(स्वास्थ)	**स्वास्थ्य**	मित्था)	मिथ्या
(स्वस्थ्य)	स्वस्थ	(अन्नोक्ति)	**अन्योक्ति**
(उलंघन)	उल्लंघन	(अन्तेष्टि)	**अन्त्येष्टि**
(उज्वल)	**उज्ज्वल**	(अनमनस्क)	अन्यमनस्क
(प्रज्ज्वल)	**प्रज्वल**	(अन्नोन्य)	अन्योन्य
(सम्पति)	सम्पत्ति	(अन्योन्नाश्रय)	**अन्योन्याश्रय**
(जोत्सना)	**ज्योत्स्ना**	(अन्तानुप्रास)	**अन्त्यानुप्रास**
(सहस्त्र)	**सहस्र**	(अजस्त्र)	**अजस्र**
(अन्तर्ध्यान)	**अन्तर्धान**	(द्वन्द)	द्वन्द्व
(मख्खन)	**मक्खन**	(अन्ताक्षरी)	**अन्त्याक्षरी**
(असतित्व)	**अस्तित्व**	(अगस्त)	अगस्त्य
(असपृश्यता)	**अस्पृश्यता**	(अक्षुण्य)	अक्षुण्ण
(आहिनक)	आह्निक	(चिन्हांकित)	चिह्नांकित
(अह्नि)	अह्न	(आह्लान)	आह्वान
(पूर्वान्हि)	पूर्वाह्न	(प्रल्हाद)	प्रह्लाद
(हरास)	ह्रास	(जान्हवी)	**जाह्नवी**
(दैदीपमान)	देदीप्यमान		

समाधान—महाप्राण ध्वनियाँ महाप्राण ध्वनियों से संयुक्त नहीं होती यथा **भभ्भड़, मठ्ठा,** लिखना गलत है। संयुक्ताक्षरों की ठीकजानकारी के लिए शुद्ध अभ्यास आवश्यक है। **'सहस्र' अजस्र** आदि शब्द असावधानी के कारण गलत होते हैं। इनके उच्चारण तथा रूप रचना पर ध्यान देकर अभ्यास कराना चाहिए। यहाँ स् + र है स् + त नहीं। 'स्वास्थ्य' भाव-वाचक संज्ञा है और 'स्वस्थ उसी से विशेषण शब्द बना है। अवधान की तरह अन्तः + धान = अन्र्धान शब्द बनता है 'अन्तर्ध्यान' अशुद्ध है। **उज्ज्वल** में उत् + ज्वल तथा **प्रज्वल**, में प्र + ज्वल है अतः यही शुद्ध हैं। अह्न, **चिह्न, पूर्वाह्न, प्रह्लाद, अह्वान** शब्द में ह् + न, ह् + ल, ह् + व संयुक्ताताक्षर हैं अतः इन्हें 'न्ह' ल्ह, व्ह, के रूप में लिखना अशुद्ध है।

[सन्धि तथा प्रत्यय के साथ शब्दों को लिखते समय प्रायः संयुक्ता-क्षर होते हैं अतः इन सबके लिए अभ्यास हेतु शब्द आगे चलकर एक साथ दिये जायंगे]

४. सन्धि ज्ञान सम्बन्धी त्रुटियाँ—इस प्रकार की त्रुटियाँ निम्न-लिखित है –

अशुद्ध	शुद्ध	सन्धि नियम
(अनाधिकार)	**अनधिकार**	(अन् + अधिकार) निषेध अर्थ में अन् का प्रयोग है 'अन' का नहीं।
(अभ्यार्थी)	अभ्यर्थी	(अभि + अर्थी) यण सन्धि-अभि = अभ्य् + अर्थी।
(अत्याधिक)	अत्यधिक	(अति + अधिक) यण सन्धि अति = अत्य् + अधिक।
(निर्पराध/निरापराध)	**निरपराध**	(निर् + अपराध) र् + अ + ॽ = र।
(तदोपरान्त)	**तदुपरान्त**	(तत् + उपरान्त) त् के स्थान पर द्।
(सदोपदेश)	सदुपदेश	(सत् + उपदेश) त् के स्थान पर द्।
(रीत्यानुसार)	रीत्यनुसार	(रीति + अनुसार) यण सन्धि रीति = रीत्य् + अनुसार।
(मतेक)	मतैक	(मत + एक) वृद्धि सन्धि अ + ए = ऐ।
(सदेव)	सदैव	(सदा + एव) ,, ,, आ + ए = ऐ।
(अतेव)	अतएव	(अतः + एव) विसर्ग सन्धि, विसर्ग का लोप।
(दुरूपयोग)	**दुरुपयोग**	(दुर + उपयोग ,, ,,
(अन्तर्कथा)	**अन्तःकथा**	विसर्ग के बाद क, ख, प, फ आने पर
(अधोपतन)	**अधः पतन**	विसर्ग यथावत बना रहता है।
(निरसता)	**नीरसता**	(निर् + रस) विसर्ग के र् के बाद र होने से रेफ का लोप हो गया और पूर्व पद दीर्घ हो गया।
(उपरोक्त)	**उपर्युक्त**	(उपरि + उक्त) यण सन्धि।

५. प्रत्यय प्रयोग सम्बन्धी त्रुटियाँ—माध्यमिक स्तर पर अनीय, इक, वतुप, मतुप प्रत्ययों के प्रयोग सम्बन्धी त्रुटियाँ मिलती हैं, जो निम्न-लिखित रूप में हैं।

अशुद्ध	शुद्ध	प्रत्यय निर्देश
(पूज्यनीय)	पूज्य या पूजनीय	अनीय प्रत्यय
(मान्यनीय)	मान्य या माननीय	,, ,,
(वन्द्यनीय)	वन्द्य या वन्दनीय	,, ,,

(आणुविक)	आणविक	इक प्रत्यय	
(नीतिवान)	नीतिमान	मतुप = मान	शब्द का अन्तिम वर्ण इ, ई, उ, ऊ हो तो 'मान' प्रत्यय किन्तु अ या आ हो तो 'वान' प्रत्यय जुटेगा
(लज्जामान)	लज्जावान	वतुप = वान	

समाधान—सन्धि तथा प्रत्यय सम्बन्धी त्रुटियों का समाधान अशुद्धियों के साथ ही दे दिया गया है। सन्धि सम्बन्धी त्रुटियाँ व्यंजन सन्धि तथा विसर्ग सन्धि में अधिक मिलती हैं। इसी प्रकार अनीय, इक, वतुप-मतुप प्रत्यय सम्बन्धी त्रुटियाँ भी मिलती हैं अतः इनका शुद्ध अभ्यास कराना आवश्यक है।

अभ्यास हेतु शुद्ध शब्दों की तालिका

अक्षौहिणी[1]	मनस्ताप	अन्तःकरण
परमौषध	निस्सन्देह/निःसन्देह	अन्तः पुर
तथैव	परिष्कार	पुनरुक्ति
अधरोष्ठ[2]	निष्कारण	पुनर्जन्म
प्रत्युपकार	निष्पाप	**अन्तः साक्ष्य**[5]
अत्युक्ति	मनोयोग	बहिः साक्ष्य
तद्रूप	तपोवन	महत्त्व (महत् + त्व)
भगवद् भक्ति	अधोलिखित	सम्मुख (सम् + मुख)
सद्धर्म	अधोगति	सम्मान (सम् + मान)
उद्धार	तेजोराशि	सन्मार्ग (सत् + मार्ग)
आच्छादन }[3]	वयोवृद्ध	संन्यासी (सम् + न्यास – ई)
अनुच्छेद }	तेजो पुँज	पुल्लिग (पुम् + लिंग)
संहार[4]	यशोदा	प्रदर्शनी ('ई' प्रत्यय)
संवाद	प्रातःकाल	प्रियदर्शिनी ('इनी' प्रत्यय)
		सिंहनी ('नी' प्रत्यय)

[१. अ + ऊ = ओ होता है किन्तु यहाँ अक्ष + ऊहिणी = अक्षौहिणी प्रयोग चलता है इसी प्रकार प्र + ऊढ़ = प्रौढ़ भी चलता है।

२. अ-आ के वाद ओ या औ आये तो वृद्धि सन्धि के अनुसार 'औ' हो जाना चाहिए यथा परम + ओषध = परमौषध (ओषध = जड़ी बूटी, औषध = दवा) किन्तु विम्ब + ओष्ठ = बिम्बोष्ठ तथा अधर + ओष्ठ = **अधरोष्ठ** ही चलता है। अधरौष्ठ नहीं, ।

३. छ के पूर्व कोई स्वर हो तो 'छ' के स्थान पर 'च्छ' हो जाता है यथा--
आ + छादन = आच्छादन, परि + छेद = परिच्छेद अनु + छेद = अनुच्छेद ।

४. म् के आगे अन्तस्थ या ऊष्म वर्ण हो तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है।
यथा--संहार, संवाद संयम, संसार आदि ।

५. अन्त्य र् के आगे अघोष वर्ण आये तो विसर्ग यथावत बना रहता है किन्तु सघोष वर्ण आने पर र् (ॅ) हो जा ता है ।

६--रूप-रचना विषयक त्रुटियाँ

कुछ शब्दों के लेखन में रूप-रचना विषयक त्रुटियां मिलती हैं, जो निम्नलिखित रूप में हैं--

क--विशेषण शब्दों का अशुद्ध प्रयोग

अशुद्ध	शुद्ध	नियम
(निरपराधी	निरपराध	ये विशेषण शब्द हैं इनमें विशेषण प्रत्यय अलग से जोड़ना अशुद्ध है ।
(निः स्वार्थी)	निः स्वार्थ	
(निर्दोषी)	निर्दोष	
(कृतघ्नी)	कृतघ्न	
(शान्तमय)	शान्तिमय	'मय' से पूर्व संज्ञा शब्द ही रहता हैं विशेषण नहीं । भ्रान्त और शान्त विशेषण हैं ।
(भ्रान्तमय)	भ्रान्तिमय	
(गतमय)	गतिमय	

ख--भाववाचक संज्ञाओं के लेखन में त्रुटियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
(पौरुषत्व)	पौरुष/पुरुषत्व
(अज्ञानता)	अज्ञान
(सौजन्यता)	सुजनता/सौजन्य
(वैमनस्यता)	वैमनस्य
(ऐक्यता)	ऐक्य/एकता
(धैर्यता)	धैर्य/धीरता
(गौरवता)	गुरुता/गौरव

समाधान--जो स्वतः विशेषण शब्द हैं उनमें अनावश्यक रूप से पुनः विशेषण प्रत्यय जोड़कर दूसरा शब्द नहीं बनाना चाहिए। इसी प्रकार भाव वाचक संज्ञाओं के लेखन में भी अनावश्यक प्रत्यय न जोड़े जायं ।

७—सामासिक शब्दों के लेखन में अशुद्धियाँ

सामासिक शब्दों के लेखन में सामासिक चिह्न लगाने सम्बन्धी त्रुटियाँ होती हैं। सामासिक पदों में कहीं योजक चिह्न लगाया जाता है और कहीं नहीं लगाया जाता। अतः इसमें भी निम्नलिखित रूप में अशुद्धियाँ मिलती हैं--

अशुद्ध	शुद्ध
(मन्त्री-मंडल)	मन्त्रिमंडल
(प्राणी-विज्ञान)	प्राणिविज्ञान
(प्राणी-मात्र)	प्राणिमात्र
(योगी-राज)	योगिराज
(संन्यासी-वर्ग)	संन्यासि वर्ग
(पक्षीराज)	पक्षिराज
(कालीदास)	कालिदास
(अध-पका)	अधपका
(कन-कटा)	कनकटा
(भू-देव)	भूदेव
(रोग-मुक्त)	रोग मुक्त
(हाथपाव)	हाथ-पाँव

समाधान—जिन सामासिक पदों में सन्धि हो गयी हो वहाँ सामासिक चिह्न लगाने का प्रश्न ही नहीं उठता। **जिन सामासिक पदों में दो पदों के युक्त होने पर कोई विकार उत्पन्न हुआ हो** यथा – कान + फटा = कनफटा तथा जहाँ सामासिक पद संयुक्त हुए हों और कोई विकार न उत्पन्न हुआ हो; यथा-डाकघर, बैलगाड़ी, वहाँ **योजक चिह्न** नहीं लगाया जाता। इन्हें क्रमशः 'संश्लिष्ट विकारी' तथा संश्लिष्ट अविकारी सामासिक पद कहते हैं। **द्वन्द्व समास** (हाथ-पाँव) तथा **षष्ठी तत्पुरुष समास (जिस तत्पुरुष समास में शब्दों में कोई विकार न उत्पन्न हुआ हो)** वहाँ योजक चिह्न लगाया जाता है।

अ—अभ्यास हेतु शुद्ध सामासिक पदों की तालिका

क—विकारी संश्लिष्ट सामासिक पद—(योजक चिह्न नहीं लगेंगे)

इकतारा	चौपाई	बहुरूपिया
कठपुतली	तिबारा	पनचक्की

कनकटा	दुबारा	बहुबाती
घुड़ दौड़	दुपट्टा	
चौराहा	दुधमुहा	हथकड़ी
चौघड़ा	पतझड़	हुड़दंग

ख–अविकारी संश्लिष्ट (योजक चिह्न नहीं लगेंगे)

एकसाथ	**राम कहानी**
एकरस	**संकट मोचन**
कामचोर	रसोई घर
कालाबाजार	मुहमाँगा
घोड़ागाड़ी	लट्ठमार
बगुला भगत	लट्ठधारी
मक्खीचूस	
मोतीचूर	

ग–संस्कृत के सामासिक पद (योजक चिह्न नहीं लगेंगे।

कमल नयन	प्राणप्रिय	**रसराज**
कार्यपटु	रससिक्त	रामबिहारी
कार्यकाल	**भूपति**	
चरण कमल	**भूदान**	
पाषाण हृदय	यथाशक्ति	

घ–हिन्दी में प्रयुक्त विदेशी भाषाओं के सामासिक पद

खुशकिस्मत	बदजबान	
गरीब निवाज	मालिक मकान	बाथरूम
दस्तखत	राहखर्च	न्यूजपेपर
दिल जला	शाहजहाँ	हैण्डबेग
बदकिस्मत	फुटबाल	मनीबैग

आ--सामासिक पद जिनमें योजक चिह्न लगाना आवश्यक है

क द्वन्द्व समास

लाभ-हानि	आयात-निर्यात	बालक-बालिका
सुख-दुख	राजा-रानी	नर-नारी
रात-दिन	कुर्ता-धोती	

पति-पत्नी	शिव-पार्वती
ऊपर-नीचे	भूत-प्रेत
नदी-नाव	भाई-बहिन

ख-षष्ठी तत्पुरुष–(जिन सामासिक पदों में कोई पद विकृत न हो वहाँ योजक चिह्न लगता है।)

वाणी-वन्दना	रावण-वध
सेवा-कार्य	जयद्रथ-वध
प्रचार-कार्य	अधिकार-पत्र
कर-निर्धारण	गृह-निर्माण
सैन्य-संचालन	वर्णमाला-ज्ञान

इ--सामासिक पदों की तरह पुनरुक्त शब्दों के साथ

कैसे-कैसे	तब-तब
पुनः-पुनः	अलग-अलग
धीरे-धीरे	समय-समय
सच-सच	पैसा-पैसा
रोम-रोम	जैसे-जैसे

८--संख्यावाची विशेषणों के लेखन में अशुद्धियाँ

संख्यावाची विशेषणों के लेखन में निम्नलिखित अशुद्धियां मिलती हैं-

अशुद्ध	शुद्ध
(छ)	छः
(नव)	नौ
(ग्यारा)	ग्यारह
(उन्निस)	उन्नीस
(उन्तीस)	उनतीस
(एकतालिस)	इकतालीस

समाधान—संख्याओं के लेखन के मानक रूप की जानकारी के अभाव में इस प्रकार की त्रुटियाँ होती हैं। कुछ उच्चारणगत भेद तथा स्थानीय प्रभाव भी पड़ता है। अतः मानकरूपका अभ्यास करने की आवश्यकता है।

अभ्यास हेतु मानक रूप

एक	इक्कीस	इकतालीस	इकसठ	इक्यासी
दो	बाईस	बयालीस	बासठ	बयासी
तीन	तेईस	तैंतालीस	तिरसठ	तिरासी
चार	चौबीस	चवालीस	चौसठ	चौरासी
पाँच	पचीस	पैंतालीस	पैसठ	पचासी
छः	छब्बीस	छियालीस	छियासठ	छियासी
सात	सत्ताईस	सैंतालीस	सड़सठ	सत्तासी
आठ	अट्ठाईस	अड़तालीस	अड़सठ	अठासी
नौ	उनतीस	उनचास	उनहत्तर	नवासी
दस	तीस	पचास	सत्तर	नब्बे
ग्यारह	इकतीस	इक्यावन	इकहत्तर	इक्यानबे
बारह	बत्तीस	बावन	बहत्तर	बानबे
तेरह	तैतीस	तिरपन	तिहत्तर	तिरानबे
चौदह	चौंतीस	चौवन	चौहत्तर	चौरानबे
पन्द्रह	पैंतीस	पचपन	पचहत्तर	पंचानबे
सोलह	छत्तीस	छप्पन	छिहत्तर	छियानबे
सत्रह	सैंतीस	सत्तावन	सतहत्तर	सत्तानबे
अठारह	अड़तीस	अट्ठावन	अठहत्तर	अट्ठानबे
उन्नीस	उनतालीस	उनसठ	उनासी	निन्यानबे
बीस	चालीस	साठ	अस्सी	सौ ।

नागरी लिपि सम्बन्धी कतिपय आक्षेपों का निराकरण

नागरी लिपि के सम्बन्ध में प्राय कुछ आक्षेप लगाये जाते रहे हैं। जिसमें इस लिपि की क्लिष्टता; लेखन में शीघ्रता का अभाव, अनावश्यक वर्ण युक्तता शिरोरेखा का अनावश्यक प्रयोग-जैसे अनेक आरोप हैं। यहाँ लिपि के कुछ वर्णों के आकार प्रकार, उनकी आवश्यकता, शिरोरेखा के प्रयोग, चन्द्रविन्दु, अनुस्वार तथा हलन्त के प्रयोग आदि के सम्बन्ध में विचार करते हुए उनके प्रयोग की आवश्यकता पर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया गया है। इधर नागरी लिपि में कतिपय महत्व पूर्ण सुधार भी हुए हैं उनसे अभी सभी लोग परिचित नहीं हैं उनपर भी हम विचार करेंगे।

शिरो रेखा—शिरोरेखा के प्रयोग को कुछ लोग अनावश्यक मानते हैं। माध्यमिक स्तर पर अनेक बच्चों के मस्तिष्क में भी शिरोरेखा अनावश्यक बन चुकी है। कक्षा ९-१०, तथा ११-१२ के छात्रों की उत्तर पुस्तिकाओं को देखते समय १० से १५ प्रतिशत छात्रों में ऐसी प्रवृत्ति देखी गयी है। इनमें १०% छात्र शिरोरेखा लगाते ही नहीं किन्तु पाँच प्रतिशत ऐसे हैं जो प्रायः पूरा वाक्य लिख लेने के बाद शब्दों को शिरौ-रेखा से बाँधने का प्रयास करते हैं।

नागरी लिपि में प्रयुक्त **शिरोरेखा न केवल वर्णों की सजावट में सहायक है वरन् इससे लिपिकी वैज्ञानिकता की रक्षा भी होती है।** ध-घ तथा भ-म ऐसे वर्ण हैं जो शिरोरेखा के माध्यम से ही पहचान में आते है शिरोरेखा के अभाव में 'घन' को धन और 'भर' को 'मर' पढ़ा जा सकता है। इसमें और स्पष्टता लाने के लिए अब ध को 'ध' और भ को 'भ' रूप में दिया गया है। **शिरोरेखा से शब्दों की परस्पर पृथकता** का भी बोध होता है 'कमला' को यदि कोई '**कम ला**' 'श्यामलता' को '**श्याम लता**' तथा शीतलता को '**शीत लता**' लिख दे तो अर्थ ही समझ में नहीं आ सकता। इसी प्रकार लम्बे-लम्बे समस्त पदों के बीच में शिरोरेखा ही हमें शब्दों को समझने में सहायता करती है। अतः शिरोरेखा को अनावश्यक समझने का प्रश्न ही नहीं उठता। छात्रों को शिरोरेखा का उचित रूप में प्रयोग करना चाहिए। अध्यापकों को चाहिए कि वे शिरोरेखा न लगाने की बच्चों की प्रवृत्ति को कदापि बढ़ावा न दें।

अनावश्यक एवं सन्दिग्ध वर्णों में सुधार—नागरी लिपि में प्रयुक्त ऋ,-ॠ लृ, ष को बहुत से विद्वान आधुनिक भारतीय भाषाओं की ध्वनियों की दृष्टि से अनावश्यक बताते रहें हैं। हिन्दी में प्रयुक्त वैदिक ध्वनियों के लिए उनका प्रयोग करना आवश्यक है। इतना अवश्य है कि अब **ऋ**-ॠ तथा लृ के स्थान पर ऋ का ही प्रयोग चल रहा है। पितृ+ऋणम् के योग से 'पितृणम' शब्द बनता है यहीं दीर्घ 'ॠ' का प्रयोग होता है **हिन्दी में इस शब्द का प्रयोग नहीं होता इसे आवश्-यकता पड़ने पर सामासिक रूप**—'पितृ-ऋण' के रूप में लिखा जाता है। इसी प्रकार 'लृ' का प्रयोग भी 'लृ + आकृतिः' के योग से लाकृतिः तथा तव + लृकारः के योग से 'तवल्कारः' शब्द बनता है इन शब्दों का उपयोग अब संस्कृत व्याकरण में केवल गुण सन्धि का उदाहरण देने के

लिए होता है। 'लृ' का दीर्घ रूप नहीं होता। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद दिल्ली की एक पुस्तक के आवरण पृष्ट पर दोनों का आकार दिया गया है। निश्चय ही भ्रमवश ऐसा हो गया है। अब हिन्दी में 'लृ' को भी वर्णमाला से पृथक कर दिया गया है। इसी प्रकार 'ऋ-ॠ' में केवल 'ऋ' **को ही वर्णमाला** में ग्रहण किया गया है। **शब्दकोश में 'ॠ' से बनने वाला एक भी शब्द उपलब्ध नहीं है।** 'ष' से बनने वाले अनेक शब्द हैं इसका प्रयोग शब्द के आरम्भ, मध्य और अन्त—षट्, षडानन, भीषण, शोषण तथा शेष-विशेष जैसे अनेक शब्दों के रूप में होता है 'ष' का शुद्ध उच्चारण हम भले ही न कर पायें पर इसका प्रयोग करना रोका नहीं जा सकता

नागरी में 'ख' के प्रयोग को 'र व' के रूप में माना जाता रहा है। इसी संदिग्धता के कारण कहते हैं एक सज्जन ने ट्रेन में यात्रा करते समय 'खागा' (फतेहपुर के एक स्टेशन) को 'रवागा' पढ़ दिया। जिसपर उनके एक मित्र ने सुधारते हुए कहा यह 'रवागा' नहीं खागा है वही सज्जन आगे बढ़े तो इलाहाबाद के पहले ही 'भरवारी स्टेशन को देखकर उसे उन्होंने 'भखारी' कह दिया जहाँ दूसरे सज्जन को इसे पुनः सुधार कर 'भरवारी' कहना पड़ा। जैसा भी रहा हो - अब रव का रूप बदलकर **'ख' कर दिया गया है** अतः अब सन्दिग्धता का प्रश्न भी समाप्त हो गया है।

क्ष त्र ज्ञ—ये तीनों वर्ण संयुक्ताक्षर में गिने जाते हैं। 'त्र' का अलग अस्तित्व अब वर्णमाला से समाप्त कर दिया गया है। क्र, प्र, म्र के रूप में अब 'त्र' **भी लिखा जाने लगा है।** किन्तु 'क्ष' और 'ज्ञ' को अनावश्यक नहीं कहा जा सकता। इन्हे क् + ष तथा ज् + ञ की संयुक्त ध्वनि होने के कारण 'क्ष' तथा 'ज्ञ' के रूप में लिखने का तर्क देना भी व्यर्थ है। वस्तुतः ये 'सन्ध्यक्षर' हैं। तत्सम शब्दों में इनका प्रयोग होता है। ये क्षेत्र, क्षात्र, लक्षण, लक्ष्य, अज्ञ, विज्ञ, अज्ञान, आदि के रूप में शब्दों के आरंभ, मध्य और अन्त सभी रूपों में प्रयुक्त होते है। 'लक्ष्य' में 'क्ष' अर्ध रूप में प्रयुक्त है। यदि इसे 'क्ष' के माध्यम से लिखने का प्रयास किया जाय तो शब्द अशुद्ध और अस्पष्ट हो जायगा।

द्विविध वर्णों का मानकीकरण—पहले कुछ वर्ण दो रूपों में लिखे जाते रहे हैं यथा—**अ—अ, झ—झ, ण—ण, ल—ल, श—श,**

क्ष - च, ज्ञ—ज्ञ। उन दिनों इन दो रूपों पर भी पर्याप्त विवाद चलता रहा है। सुविधा की दृष्टि से अब इनके प्रथम रूप अ, झ, ण, ल, श, क्ष तथा ज्ञ को ही मानक वर्णमाला में रखा गया है।

अनुनासिक, अनुस्वार और नासिक्य व्यंजनों का प्रयोग—इनके सम्बन्ध में भी लोगों के बीच अनेक भ्रम बने हुए हैं, जिसके कारण बच्चों द्वारा भी इनका गलत प्रयोग किया जा रहा है। अनुनासिक को चन्द्रविन्दु (ँ), अनुस्वार को अं (ं) तथा नासिक्य व्यंजन ङ्, ञ्, ण् न् म् को व्यक्त करने के लिए भी अनुस्वार (ं) के प्रयोग चल रहे हैं। इनके प्रयोग की शुद्ध जानकारी के अभाव में बच्चों द्वारा अनेक प्रकार की त्रुटियां की जा रही हैं। कुछ पत्र-पत्रिकाओं में तीनों रूपों को समझकर प्रयुक्त न करके सर्वत्र अनुस्वार रूप (ं) के प्रयोग को ही महत्त्व दिया जा रहा है। जो उचित नहीं है। क्योंकि ऐसा करने से हँसना और हंस, डँसना और डंस, गाँधी और गंधी में कोई भेद ही नहीं रह जायगा।

अनुनासिक के स्थान पर चन्द्र बिन्दु (ँ) का प्रयोग किया जाय यथा—आँख, भाँग, ठाँव, गाँव, अँधेरा आदि। किन्तु मात्रा युक्त शब्दों के साथ अनुनासिक के प्रयोग में केवल बिन्दु का प्रयोग किया जाय यथा सिंचाई, भींगना, भेंट, ईंट। मानक वर्तनी में शब्दों के बहुबचनांत अ, आ, ए के साथ चन्द्र विन्दु के प्रयोग के स्थान पर केवल बिन्दु के प्रयोग की छूट दी गयी है यथा जायं, नदियां, चिड़ियां, वधुएं, लताएं आदि किन्तु एकवचन रूपमें चन्द्र बिन्दु के ही प्रयोग को मान्यता दी गयी है यथा—हँसना, आँख, मियाँ, धुवाँ, मुँह आदि। सिंह, किंशुक, हिंसा, आदि शब्दों में बिन्दु का प्रयोग अनुस्वार के लिए हुआ है। पंचमाक्षरों के साथ भी क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग के साथ पंचमाक्षर के स्थान पर सुविधा की दृष्टि से 'अनुस्वार' के प्रयोग को मानक स्वीकार कर लिया गया है किन्तु त वर्ग तथा प वर्ग के साथ पंचमाक्षर 'न्' और 'म्' के प्रयोग पर ही बल दिया गया है।

वर्ण संयोग या संयुक्ताक्षर—संयुक्ताक्षरों के लेखन में भी पहले वक्ता, कुत्ता, सत्ता क्रिया, अन्न, भिन्न, उच्च, लट्ठा, लड्डू के रूप में लिखने की प्रणाली थी अब उन्हें भी एक मानक रूप देकर—वक्ता, कुत्ता, सत्ता, क्रिया, अन्न, भिन्न, उच्च, लट्ठा, लड्डू के रूप में लिखने का अभ्यास कराया जा रहा है। इस सम्बन्ध में छात्रों को केवल इतना ही

समझना है कि पाई वाले वर्ण यथा ख, ग, ध, च, ज, त, ध, न, प ब, भ, म आदि को दूसरे वर्ण से संयुक्त करते समय केवल पाई हटा दी जाती है। बिना पाई के वर्ण ट वर्ग छ, आदि को हलन्त की सहायता से लिखते हैं। क, फ ह की शुण्डिका आधी कर देते हैं।

संयुक्ताक्षर के रूप में 'र' के लेखन की प्रक्रिया अन्य वर्णों से भिन्न है। पाई वाले वर्णों को दूसरे वर्णों से संयुक्त करते समय जहाँ पाई हटा देते हैं वहाँ 'र' को दूसरे से संयुक्त करते समय उसका रूप ही बदल देते है यथा—धर्म, कर्म, चर्म, मर्म, दर्प, सर्प आदि अर्थात र का अर्ध रूप रेफ ˚ हो जाता है। इसी प्रकार 'र' से जब दूसरे वर्णों को संयुक्त करते हैं उस समय 'र' के रूप में ही परिवर्तन आ जाता है अर्थात पाईवाले और मध्य पाईवाले वर्णों के साथ र क्रमश (/) तथा बिना पाईवाले वर्णों के साथ '(∧)' रूप में हो जाता है यथा—क्रय, प्रतिमा, नम्र, तथा राष्ट्र, ड्रम, ट्राम आदि।

श के दो रूप—'श' का एक रूप 'श्' के रूप में चलता रहा है। पुराने छापे के वर्णों में दूसरे रूप का प्रयोग केवल अर्ध रूप में होता रहा है यथा—विश्लेषण, श्लेष, तथा श्लोक, श्रेय, शृंगार के रूप में। पूर्ण या स्वर युक्त रूप (श) में इसका स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता था। अब श के 'श' रूप का प्रयोग केवल 'र' या 'ऋ' से संयुक्त करते समय होता है यथा—श्री, श्रेय, आश्रय, विश्राम, परिश्रम, पारिश्रमिक, शृंगार, शृगाल।



परिशिष्ट

क्ष युक्त शब्द	ण युक्त शब्द	
अन्तरिक्ष	परीक्षक	अंकगणित
अन्त्याक्षरी	परिवीक्षण	अंगत्राण
अक्ष	पुनरीक्षण	अन्त: प्रेरणा
अक्षत	प्रतिपक्ष	अन्तर्राष्ट्रीयकरण
अक्षम्य	प्रतिहस्ताक्षर	अंधानुकरण
अक्षांश	प्रतीक्षालय	अकर्मण्य
अक्षि	बुभुक्षित	अकल्याण
अक्षुण्ण	भक्ष्याभक्ष्य	अकारण
अधीक्षक	भिक्षाटन	अग्रगण्य
अध्यक्ष	मुमुक्षु	अपहरण
अपेक्षित	रुद्राक्ष	अप्रामाणिक
अन्वीक्षण	विरूपाक्ष	अभिभाषण
अशिक्षित	संक्षिप्तीकरण	अवर्णनीय
अहस्तक्षेप	सर्वेक्षण	आणविक
आकांक्षी	सर्वेक्षक	आत्मनियन्त्रण
उच्चाकांक्षा	जीर्णोद्धार	आत्मीकरण
आत्मसाक्षात्कार	जीवाणु	उत्कीर्ण
उत्प्रेक्षा	तारुण्य	उदाहरणार्थ
उपलक्ष्य	तरुणिमा	उद्घोषणा
कृपाकांक्षी	ध्वजारोहण	उपेक्षणीय
कोषाध्यक्ष	नवीनीकरण	एकीकरण
क्षतिपूर्ति	निरस्तीकरण	कर्तव्यपरायण
क्षितिज	निराकरण	गणतन्त्र
क्षुब्ध	निरूपण	गणराज्य
क्षेपक	निर्णयात्मक	गर्हणीय
दीक्षांत	परिणत	गवेषणा
दूरवीक्षण	परिणति	गुणातीत

निरक्षर	परिणाम	गुणानुवाद
निरपेक्ष	परिणीत	गौण
पक्षपात	परिमाण	घृणास्पद
पक्षाघात	परिण म	चरणामृत
परिक्षालन	पाणिग्रहण	चरणोदक
	पृथक्करण	चिरस्मरणीय
	पोषण	छिद्रान्वेषण
	प्रकटीकरण	प्राणाधार
	प्रकीर्ण	प्रेक्षणीय
	प्रणत	मसृण
	प्रणति	मुद्रणालय
	प्रणयन	मृणालिनी
	प्रणयी	म्रियमाण
	प्रणेता	रमणीक
	प्रदक्षिणा	वाष्पीकरण
	प्रसारण	विदीर्ण
	प्रस्फुरण	विवरणिका
	पूर्णाहुति	स्थिरीकरण
		स्वर्गारोहण
		हस्तांतरण

'य' युक्त शब्द	**'व' युक्त शब्द**		**व युक्त अरबी-फारसी के शब्द**
यकृत	वक्र	विज्ञान	वकील
यज्ञ	वक्तव्य	विज्ञापन	वकालत
यक्ष्मा	वचन	विडम्बना	वक्त
याचक	वज्र	विदूषक	वगैरह
याचना	वट	विद्युत	वजीर
यंत्रणा	वटी	विप्लव	वजीफा
युक्ति	वणिक	विमुख	वफा
युवती	वत्स	विलक्षण	वफादार
योजना	वर्ष	विवाद	विरासत

यौवन
यद्यपि
यातना
यामिनी
याददास्त
यादगार
अयोध्या
प्रयत्न
संयोग
अयोग्य
अभियान
योद्धा
डाकिया
अंधियारा
अनिवार्य
आर्य
आचार्य
चातुर्य
परिहार्य
माधुर्य
वीर्य

वंश
वंशी
वध
वन्धन
वधिक
वधु
वन
वनिता
वन्दना
वन्ध्या
वर्तनी
वरुण
वंचित
वरिष्ठ
वसुन्धरा
वाङ् मय
वाचाल
वांछित
वात्सल्य
वास्तविक
वाहन
सत्कार्य
अपरिहार्य
सूर्य
आश्चर्य

विवेक
विश्वास
विसर्ग
विहंगम
विह्वल
वीणा
वीर्य
वृक्ष
वृत्त
वृहस्पति
वैयाकरण
वैराग्य
वैष्णव
व्यंजक
व्यंग्य
व्यंजना
व्यभिचार
व्यवस्था
व्यस्त
व्याकरण
व्याख्या
विकट
विकराल
विकास
विकसित
विगत
विघ्न
विचार
विचित
विच्छेद
विकृत

वली
वल्लाह
वसीयत
वहम
वहमी
वहशत
वाकया
वाकिफ
वाजिब
वायदा
वापस
वारदात
वारिश
वालिद
वास्ता
वास्ते
वाहियात
विलायत
वीरान
व्याधि
व्यास
व्योम
व्रत
पूर्व
गर्व
पर्व
गर्व
खर्व

(कुछ मिश्रित शब्द) सामान्य अशुद्धि वाले शुद्ध शब्द

'ष' युक्त शब्द—

अभिषेक
अनुष्ठान
आनुषंगिक
उष्ण
उषा
ऊष्मा
ऋषि
कलमष
कलुष
गरिष्ठ
झष
दोष
ज्येष्ठ
पाषण
शीर्ष
पीयूष
प्रतिष्ठान
परुष
पुरुष
वरिष्ठ
शुश्रूषा
षोडश
षष्ठ
निषेध
निषाद
विषाद
सृष्टि

अत्यधिक
अनधिकार
वाद-विवाद
तदुपरान्त
रीत्यनुसार
सदुपदेश
आच्छादन
उज्ज्वल
पश्चात्ताप
पुल्लिग
छतच्छाया
उल्लंघन
उच्छ्वास
महत्त्व
सद्‌गुरु
अन्तर्गत
अन्तरात्मा

अध:पतन
तेजोमय
तेजोराशि
दुरवस्था
पुनरुत्थान
नीरोग
दुस्साध्य
मनोयोग
मनोविकार
मनोकामना

भ्रमपूर्ण उच्चारण व लेखन वाले शब्द

शुद्ध	अशुद्ध
उपलक्ष्य	(उपलक्ष्य)
राजनीति	(राज्यनीति)
राजनैतिक	(राज्यनैतिक)
बुधवार	(वुद्धवार)
गोपनीय	(गोप्यनीय)
अहोरात्र	(अहोरात्रि)
हस्तक्षेप	(हस्ताक्षेप)
अन्त्याक्षरी	(अन्ताक्षरी)
अनसूया	(अनुसूया)
अन्तर्धान	(अन्तर्ध्यान)
इस्तिरी	(इस्त्री)
जागरित	(जाग्रत)
जाग्रतावस्था	(जागृतावस्था)
राजमहल	(राज्य महल)
तृतीय	(त्रितीय)
त्रैमासिक	(त्रय मासिक)

तृषा
मृषा

विसर्ग युक्त शब्द या उपसर्ग

अत	
अन्तः	सामान्यतः
अधः	विशेषतः
बहिः	मुख्यतः
पुनः	अन्ततः
पुरः	वस्तुतः
प्रायः	इतस्ततः
नभः	प्रातः
शनैः	स्वतः
क्रमशः	शतशः
अनेकशः	वाक्यशः
कोटिशः	

देदीप्यमान	(दैदीपमान)
जाज्वल्यमान	(ज्वाजल्यमान)
पुनरवलोकन	(पुनरावलोकन)
गत्यवरोध	(गत्यावरोध)
गरुड़ध्वज	(गरुणध्वज)
खाद्यान्न	(खाद्यान्य)



सन्दर्भ-ग्रन्थ

- हिन्दी नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी—डॉ० अनन्त चौधरी ।
- हिन्दी का व्यावहारिक व्याकरण और रचना—रमापति शुक्ल ।
- आओ वर्तनी सुधारें (पू० मा० स्तर)—डॉ० शोभनाथ त्रिपाठी ।
- आओ वर्तनी सुधारें (माध्यमिक स्तर)—ठाकुर प्रसाद शुक्ल ।
- हिन्दी व्याकरण—कामता प्रसाद गुरु ।
- हिन्दी वर्तनी की समस्याएं—डॉ० भोलानाथ तिवारी
  डॉ० किरण बाला ।

तिवार
।

जीवन शिक्षा मुद्रणालय (प्रा०) लि० गोलघर, वाराणसी में मुद्रित ।